अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं – जैन धर्म चन्द्रिका (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) 'पमायायरिये' किस व्रत से सम्बन्धित है-
(क) सातवाँ (ख) आठवाँ
(ग) नवमा (घ) दसवाँ (ख)

(b) असातावेदनीय कर्म कितने प्रकार से बंधता है-
(क) 10 (ख) 8
(ग) 12 (घ) 6 (ग)

(c) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उपयोग का अंक है-
(क) 55 (ख) 78
(ग) 53 (घ) 58 (घ)

(d) मोहनीय कर्म से कितनी संज्ञाएँ उदय में आती हैं-
(क) 7 (ख) 2
(ग) 1 (घ) 4 (क)

(e) मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण किसने किया-
(क) प्रदेशी राजा ने (ख) चण्डकौशिक ने
(ग) श्रेणिक राजा ने (घ) प्रसन्नचन्द्र ने (ग)

(f) निम्न में से दसवें व्रत का अतिचार है-
(क) रुवाणुवाए (ख) मोहरिए
(ग) सचित्तपडिबद्धाहारे (घ) खित्तवुड्ढी (क)

(g) निम्न में से शुद्ध शब्द है-
(क) कामभोग तिव्वाभिलासे (ख) संजुत्ताहिगरणे
(ग) धणियाती (घ) उवहाणविहि (ख)

(h) ''गुरुजन के निमित्त से त्याग भंग करना पड़े'', यह किस शब्द का अर्थ है-
(क) सहसागारेणं (ख) अन्नत्थऽणाभोगेणं
(ग) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं (घ) महत्तरागारेणं (घ)

(i) 'अणुमयं' का अर्थ है-
(क) विशेष सम्मान को प्राप्त (ख) विश्वास करने योग्य
(ग) मानने योग्य (घ) धारण करने योग्य (क)

(j) समिति-गुप्ति का थोकड़ा उत्तराध्ययन सूत्र के किस अध्ययन से लिया गया है-
(क) 23 वाँ (ख) 24 वाँ
(ग) 25 वाँ (घ) 26 वाँ (ख)

(k) वैद्य की तरह चिकित्सा करके आहारादि लेना कौनसा दोष है-
(क) आजीव (ख) वणीमगे
(ग) अभिहडे (घ) तिगिच्छे (घ)

(l) किस तीर्थंकर के लिए 'जगधार' शब्द का प्रयोग हुआ-
(क) कुंथुनाथ जी (ख) नमिनाथ जी
(ग) अरिष्टनेमि जी (घ) अरनाथ जी (ग)

(m) ''आपके गुण तीनों लोक में व्याप्त है'' भक्तामर स्तोत्र के कौनसे श्लोक से है-
(क) 9वाँ (ख) 12वाँ
(ग) 14वाँ (घ) 16वाँ (ग)

(n) निम्न में से 'उत्पादना' का दोष है-
(क) पामिच्चे (ख) निमित्ते
(ग) निखित्त (घ) लित्त (ख)

(o) निम्न में से ''एगासणा सूत्र'' का आगार है-
(क) आकुंचणपसारणेणं (ख) साहुवयणेणं
(ग) लेवालेवेणं (घ) उक्खित्तविवेगेणं (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) देवगति में सबसे कम आहार संज्ञा पायी जाती है। (हाँ)
(b) सचित्त पिहणया सातवें व्रत का अतिचार है। (नहीं)
(c) वचन की सरलता से नामकर्म का बंध नहीं होता है। (नहीं)
(d) 'फल' असणं के अन्तर्गत आता है। (नहीं)
(e) गाड़ियाँ आदि बनाकर बेचना 'साडीकम्मे' कहलाता है। (हाँ)
(f) 'दुच्चिट्ठियस्स' का अर्थ बुरे चिन्तन से है। (नहीं)
(g) चारों ओर साढ़े तीन हाथ भूमि 'मिउग्गहं' कहलाता है। (हाँ)
(h) प्रतिक्रमण का सार 'दर्शन सम्यक्त्व' पाठ में है। (नहीं)
(i) 'अणणुपालणया' का अर्थ 'अनुपालन किया हो' होता है। (नहीं)
(j) 42 दोष रहित आहारादि की गवेषणैषणा की जाती है। (नहीं)
(k) 'पुव्विपच्छासंथवं' दोष जीव की लोलुपता से साधु को लगता है। (हाँ)
(l) निर्दोष वस्तु सचित्त से ढँकी हो तो साहरिय दोष लगता है। (नहीं)
(m) ''भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति'' शब्द भक्तामर स्तोत्र के दसवें श्लोक की अन्तिम पंक्ति है। (हाँ)
(n) आपके मुख को चन्द्रमा से उपमित नहीं किया जा सकता। (हाँ)
(o) दूसरों को हानि पहुँचाने का विचार करना 'समारंभ' दोष है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	खित्तवुड्ढी	(क) पामिच्चे	छठा व्रत
(b)	परीसहा	(ख) दयाधर्म	बड़ी संलेखना
(c)	अणणुपालणया	(ग) पोरिसिं	ग्यारहवाँ व्रत
(d)	केवली प्ररुपित	(घ) एगासणा	दयाधर्म
(e)	भाषा	(च) लेवालेवेणं	सावद्य
(f)	उधार	(छ) दस	पामिच्च
(g)	स्थंडिल	(ज) बड़ी संलेखना	दस
(h)	साहुवयणेणं	(झ) ग्यारहवाँ व्रत	पोरिसिं
(i)	तिविहंपि	(य) छठा व्रत	एगासणा
(j)	आयंबिल	(र) सावद्य	लेवालेवेणं

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a) मैं अधीरता से पैदा होती हूँ। भय संज्ञा
(b) मेरा अर्थ धरोहर दबाने के लिए झूठ बोलना है। णासावहारो
(c) मुझसे प्रवचन माता की आराधना होती है। प्रतिक्रमण
(d) मैंने अशुभ योग का प्रतिक्रमण किया था। प्रसन्नचन्द्र राजर्षि
(e) मैं काम विकार बढ़ाने वाली कथा करने वाला अतिचार हूँ। कंदप्पे
(f) मेरा एक दिन-रात के लिए त्याग दसवें व्रत के अन्तर्गत लेना युक्तिसंगत है। रात्रि भोजन
(g) मेरे द्वारा आहारादि भोगते समय शुद्धि-अशुद्धि का उपयोग रखा जाता है। परिभोगैषणा

(h) मैं ऐसा दोष हूँ, जो औषध बतलाकर आहारादि लेने पर लगता हूँ। मूलकम्मे
(i) मैं काया की अशुभ प्रवृत्तियों को रोकती हूँ। काय-गुप्ति
(j) वह दोष जिससे साधु आहार ग्रहण करता है और आहार छोड़ता है। कारणे
(k) मैं दो के शामिल की वस्तु एक-दूसरे की बिना आज्ञा के देने वाला दोष हूँ। अणिसिट्ठे
(l) आपकी चर्चा मात्र से ही मैं नष्ट होने लगता हूँ। पाप
(m) मेरे प्रभाव से यह स्तोत्र सज्जन पुरुषों के चित्त को आकर्षित करेगा। ऋषभदेव/प्रथम जिनेन्द्र
(n) मैं प्रलयकाल की हवा से भी चलायमान नहीं होता। सुमेरु पर्वत
(o) मुझे धर्म-जिनेश्वर से उपमित किया गया है। कुंथुनाथ

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) आयंबिलं.....गिहिसंसटठेणं। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
आयम्बिलं पच्चक्खामि अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहिसंसट्ठेणं।

(b) पीत्वा.....इच्छेत्।रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति-दुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क इच्छेत्।।

(c) त्वत्संस्तवेन.....शरीरभाजाम्।रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
त्वत्संस्तवेन भवसंतति सन्निबद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।

(d) 'इंगाले' का अर्थ लिखिए।
भोजन में गृद्ध होकर स्वाद की प्रशंसा करते हुए खाना इंगाले दोष हे।

(e) पौषध में किसका त्याग करना आवश्यक है ? (कोई दो)
पौषध में चारों प्रकार के आहार का, अब्रह्म सेवन का, स्वर्णाभूषणों का, शरीर की शोभा-विभूषा का, शस्त्र-मूसलादि का एवं अन्य सावद्य कार्यों का त्याग करना आवश्यक है।

(f) 'अतिचार' किसे कहते हैं ?
व्रत को भंग करने की सामग्री इकट्ठी करना, व्रत भंग के निकट पहुँच जाना अतिचार है।

(g) 'निदान शल्य' क्या है ?
धर्माचरण के द्वारा सांसारिक फल की कामना करना, भोगों की लालसा रखना अर्थात् धर्मकरणी का फल भोगों के रूप में प्राप्त करने हेतु अपने जप-तप-संयम को दाव पर लगा देना 'निदान शल्य' कहलाता है।

(h) अशुभ योग का प्रतिक्रमण किन पाठों से होता है ?
इच्छामि ठामि, अठारह पापस्थान, नवमें व्रत से।

(i) 'तप्पडिरुवगववहारे' का अर्थ लिखिए।
वस्तु में भेल -संभेल (मिलावट) की हो।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) धर्मनाथ का .....भगवान। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
धर्मनाथ का नाम सुमरते, शांतिनाथ को चित्त में धरते।
जय कुंथु, जय अरनाथ, जय चौबीसी भगवान।

(b) श्री श्रेयांस.....सन्त। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
श्री श्रेयांस वासुपूज्य शिवरुँ, विमल विमल मतिवन्त
अनन्तनाथ जी ने धर्म जिनेश्वर, शांति करो श्री सन्त।।

(c) यैः शान्तराग.....रूपमस्ति। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
यैः शान्तरागरूचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति।।

(d) ''पोरिसं सूत्र'' लिखिए।

उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवययेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

(e) एषणा समिति की परिभाषा लिखते हुए उसके भेद अर्थ सहित संक्षेप में लिखिए।

42 दोष टालकर भिक्षा आदि लेने की सम्यक् (निर्दोष) प्रवृत्ति को एषणा समिति कहते हैं।

एषणा समिति के तीन भेद है-

1. गवेषणैषणा- आहार आदि ग्रहण करने के पहले शुद्धि-अशुद्धि की खोज करना।
2. ग्रहणैषणा- आहारादि ग्रहण करते समय शुद्धि-अशुद्धि का ध्यान रखना।
3. परिभोगैषणा- आहारादि भोगते समय शुद्धि-अशुद्धि का उपयोग रखना।

(f) निम्न शब्दों का अर्थ हिन्दी में लिखिए-

सिरसावत्तं	मस्तक से आवर्तन करके
अब्भुट्ठिओमि	उद्यत हुआ हूँ।
आणवणप्पओगे	मर्यादा किये हुए क्षेत्र से आगे की वस्तु को आज्ञा देकर मांगना।

(g) बारहवें व्रत में करण योग क्यों नहीं है ?

बारहवें व्रत में साधु-साध्वी को चौदह प्रकार की निर्दोष वस्तुएँ देने तथा भावना भाने का उल्लेख है। पापों के त्याग का वर्णन नहीं होने से इसमें करण-योग की आवश्यकता नहीं है।

(h) 'करेमि भंते का पाठ' प्रतिक्रमण करते समय पुनःपुनः क्यों बोला जाता है ?

समभाव की स्मृति बार-बार बनी रहे, प्रतिक्रमण करते समय कोई सावद्य प्रवृत्ति न हो, राग-द्वेषादि विषम भाव नही आये, इसके लिए प्रतिक्रमण में करेमि भंते का पाठ पहले, चौथे व पाँचवें आवश्यक में कुल तीन बार बोला जाता है।

(i) पृथ्वीकाय के मूल भेद कितने हैं ? इसके कुल भेद किस प्रकार बनते हैं ?

पृथ्वीकाय के मूल भेद -350 है।

350 x 5 वर्ण= 1750 x 2 गंध = 3500 x 5 रस=1,40,000 x 5 संस्थान = 7,00,000 कुल भेद ।